बुंदेलखंड में भी अब बढ़ेगा खरीफ फसलों का दायरा

जासं, बांदा : बुंदेलखंड के लिए शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। वर्तमान मे दलहन तिलहन व मोटे अनाज के क्षेत्र में शोध की अपार संभवनाएं है। बुंदेलखंड में पलायन एवं पानी रोकना जरूरी है। प्रदेश एवं देश के अन्य क्षेत्रों में खरीफ फसल काफी ज्यादा होती हैं, जबकि बुंदेलखंड में सीमित है। इसका दायरा बढ़ाया जाएगा।

यह बातें कृषि एवं प्रौद्योगिक कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा.यूएस गौतम ने प्रथम अनुसंधान परिषद की बैठक में कहीं। उन्होंने बताया कि अगले तीन दिनों में देश के नामचीन विज्ञानी बुंदेलखंड के लिए विभिन्न विषयों पर सुझाव देंगे, जिसे भविष्य में बुंदेलखंड में लागू कर शोध को आगे बढ़ाया जाएगा। कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद प्रथम तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक में भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डा वीए टोनापी तथा केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डा.वीके सिंह भी शामिल हुए। सभी ने चल रहे शोध परियोजनाओं तथा भविष्य की योजनाओं को देखते हुए महत्वपूर्ण सुझाव साझा किए।

बुन्देलखण्ड में पलायन व पानी रोकना बहुत जरूरी : कुलपति

कृषि विवि में उन्नत शोध कार्यों को बढ़ाने के लिए 3 दिनी बैठक आयोजित

बाँदा : बुन्देलखण्ड में दलहन, तिलहन व मोटे अनाज के क्षेत्र में शोध की अपार सम्भावनाएं हैं। इस क्षेत्र में पलायन व पानी रोकना बहुत आवश्यक है। प्रदेश व देश के अन्य क्षेत्रों में खरीफ फसल का उत्पादन बेहतर होता है, लेकिन इस क्षेत्र में नहीं होता है जो शोध का विषय है।

बुन्देलखण्ड विवि के कुलपति प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह ने प्रथम अनुसंधान परिषद की 3 दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए कहा कि इन तीन दिनों में देश के नामचीन वैज्ञानिकों द्वारा बुन्देलखण्ड के कृषि क्षेत्र के विकास के सम्बन्ध में विभिन्न विषयों पर अपने सुझाव देंगे। इस अवसर पर अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डॉ. वीएन तोनापी तथा केन्द्रीय बरानी कृषि अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डॉ. वीके सिंह द्वारा

बाँदा : कृषि विवि में मुख्य अतिथि को सम्मानित करते कुलपति। ▸▸ जागरण

प्रतिभाग किया गया। विशेषज्ञों ने शोध परियोजनाओं तथा भविष्य की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कृषि विवि के कृषि महाविद्यालय में संचालित शोध परियोजनाओं की समीक्षा भी की गई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. अखिलेश मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान विवि द्वारा भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर भी किए गए। कार्यक्रम में डॉ. जीएस पंवार, डॉ. एसबी द्विवेदी, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. बीके गुप्ता आदि मौजूद रहे।

बुंदेलखण्ड के लिए शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता : कुलपति

उन्नत शोध कार्य बढ़ाने को शोध परिषद का तीन दिवसीय मंथन

बांदा। बुन्देलखण्ड के लिये शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। वर्तमान मे दलहन तिलहन व मोटे अनाज के क्षेत्र मे शोध की अपार संभावनाएं है। बुन्देलखण्ड मे पलायन एवं पानी रोकना आवश्यक है। प्रदेश एवं देश के अन्य क्षेत्रो मे खरीफ फसल का आक्षादन होता है परन्तु यहां नही है, यह भी शोध का विषय है। आगामी तीन दिनों में देश के नामचीन वैज्ञानिको द्वारा बुन्देलखण्ड के लिए विभिन्न विषयो पर सुझाव दिए जाएंगे। जिसे भविष्य मे लागू कर शोध को आगे बढ़ाया जावेगा। यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रथम अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय बैठक के उदघाटन सत्र कही। कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय बांदा की स्थापना के बाद प्रथम तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक गुरुवार को कुलपति श्री सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। विशेषज्ञ के रूप मे भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डा. वीए टोनापी तथा केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डा. वीके सिंह द्वारा प्रतिभाग किया गया। विशेषज्ञों द्वारा चल रहे शोध परियोजनाओ तथा भविष्य की योजनओं को देखते हुए महत्वपूर्ण सुझाव साझा किये। कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय मे संचालित शोध परियोजनाओ की समीक्षा की गयी। जिसमे अनुसंधान परिषद के समक्ष कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता तथा सभी विभागाध्यक्षो द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। शोध परियोजनाओं की प्रगति तथा कार्य योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए विशेषज्ञो द्वारा वर्षा जल संरक्षण, मृदा जीवांश प्रबंध, एकीकृत फसल प्रणाली, फसल विविधिकरण, पशुधन सुधार, चारा प्रबंधन, दलहन-तिलहन तथा कदन्न फसलो की उन्नत प्रजातियो के विकास तथा उच्चताप सहिष्णु फसल प्रजातियो के विकास पर बल दिया गया। कार्यक्रम में डा. अखिलेश मिश्रा निदेशक शोध द्वारा बुन्देलखण्ड की भौगोलिक, आर्थिक-सामाजिक व कृषि-जलवायु स्थिति शोध आवश्यकताओं तथा विश्वविद्याल में संचालित शोध एवं बीज उत्पादन कार्यक्रम पर प्रस्तुतीकरण दी गई। शोध व शैक्षणिक गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर भी किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक प्रसार डा. एनके बाजपेयी, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डा. जीएस पंवार, अधिष्ठाता उद्यान महाविद्यालय डा. एसवी द्विवेदी, अधिष्ठाता वानिकी महाविद्यालय डा. संजीव कुमार, विश्वविद्यालय के निदेशक गण अधिकरी गण व प्रध्यापक तथा प्रभारी मीडिया डा. बीके गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

बांदा। कृषि विश्वविद्यालय मे उन्नत शोध कार्यो को बढाने के लिए शोध परिषद का तीन दिवसीय मंथन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा बुन्देलखण्ड के लिये शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। वर्तमान मे दलहन तिलहन व मोटे अनाज के क्षेत्र मे शोध की अपार संभवनाएं है। विशेषज्ञ के रूप मे भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक, डा वीए टोनापी तथा केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डा वीके सिंह ने प्रतिभाग किया।

बुंदेलखंड के लिए शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता : कुलपति

बांदा (एसएनबी)। बुन्देलखण्ड के लिये शोध कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। वर्तमान मे दलहन तिलहन व मोटे अनाज के क्षेत्र मे शोध की अपार संभवनाएं है। बुन्देलखण्ड मे पलायन एवं पानी रोकना आवश्यक है। प्रदेश एवं देश के अन्य क्षेत्रो मे खरीफ फसल का आक्षादन होता है परन्तु यहां नही है, यह भी शोध का विषय है। आगामी तीन दिनों में देश के नामचीन वैज्ञानिको द्वारा बुन्देलखण्ड के लिए विभिन्न विषयो पर सुझाव दिए जाएंगे। जिसे भविष्य मे लागू कर शोध को आगे बढ़ाया जायेगा। यह बात विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रथम अनुसंधान परिषद की तीन दिवसीय बैठक के उदघाटन सत्र कही।

विश्वविद्यालय में किया गया तीन दिवसीय बैठक का आयोजन

बांदा : बैठक में मौजूद कुलपति व अतिथिगण। *फोटो : एसएनबी*

कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय बांदा की स्थापना के बाद प्रथम तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक गुरुवार को कुलपति श्री सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। विशेषज्ञ के रूप मे भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डा. वीए टोनापी तथा केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डा. वीके सिंह द्वारा प्रतिभाग किया गया। विषेशज्ञों द्वारा चल रहे शोध परियोजनाओ तथा भविष्य की योजनओं को देखते हुए महत्वपूर्ण सुझाव साझा किये। कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय मे संचालित शोध परियोजनाओ की समीक्षा की गयी। जिसमे अनुसंधान परिषद के समक्ष कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता तथा सभी विभागाध्यक्षो द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। शोध परियोजनाओं की प्रगति तथा कार्य योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए विशेषज्ञो द्वारा वर्षा जल संरक्षण, मृदा जीवांश प्रबंध, एकीकृत फसल प्रणाली, फसल विविधिकरण, पशुधन सुधार, चारा प्रबंधन, दलहनन्तिलहन तथा कदन्न फसलो की उन्नत प्रजातियो के विकास तथा उच्चताप सहिष्णु फसल प्रजातियो के विकास पर बल दिया गया। कार्यक्रम में डा. अखिलेश मिश्रा निदेशक शोध द्वारा बुन्देलखण्ड की भौगोलिक, आर्थिकन्सामाजिक व कृषिन्जलवायु स्थिति शोध आवश्यकताओं तथा विश्वविद्याल में संचालित शोध एवं बीज उत्पादन कार्यक्रम पर प्रस्तुतीकरण दी गई। शोध व शैक्षणिक गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय कदन्न फसल अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के साथु एक एमओयू पर हस्ताक्षर भी किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक प्रसार डा. एनके बाजपेयी, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डा. जीएस पंवार, अधिष्ठाता उद्यान महाविद्यालय डा. एसवी द्विवेदी, अधिष्ठाता वानिकी महाविद्यालय डा. संजीव कुमार, विश्वविद्यालय के निदेशक गण अधिकरी गण व प्रध्यापक तथा प्रभारी मीडिया डा. बीके गुप्ता आदि उपस्थित रहे।